



# एग्री मैगज़ीन

(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)  
वर्ष: 03, अंक: 01 (जनवरी, 2026)  
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध  
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एन.: 3048-8656

## अमरबेल नियंत्रण से नाइजर उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि:

### जनजातीय क्षेत्र से एक सफलता कहानी

डॉ. योगेश कुमार, \*संदीप चौहान एवं डॉ. एस के पाण्डेय

कृषि विज्ञान केन्द्र, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक (म.प्र.), भारत

\*संवादी लेखक का ईमेल पता: [chouhankvk@igntu.ac.in](mailto:chouhankvk@igntu.ac.in)

**नाइजर** (*Guizotia abyssinica*) जनजातीय क्षेत्रों की एक प्रमुख तिलहनी फसल है, जो वर्षा आधारित कृषि प्रणाली में कम लागत पर किसानों को अतिरिक्त आय का अवसर प्रदान करती है। इसके बावजूद परंपरागत खेती पद्धतियों में अमरबेल (*Cuscuta*) जैसे परजीवी खरपतवार का अत्यधिक प्रकोप नाइजर उत्पादन की एक गंभीर समस्या बना हुआ है। अमरबेल का प्रकोप फसल की बढ़वार, उपज एवं गुणवत्ता को गंभीर रूप से प्रभावित करता है, जिसके परिणामस्वरूप किसानों को कम उत्पादन एवं कम लाभ प्राप्त होता है।

#### किसान का परिचय

किसान का नाम : श्री दयाराम (पिता – श्री शोभनाथ)

ग्राम : हरटोला

विकासखंड : पुष्पराजगढ़

जिला : अनूपपुर (मध्यप्रदेश)

#### किसान एवं खेत की पृष्ठभूमि

यह सफलता कहानी जनजातीय क्षेत्र के प्रगतिशील कृषक श्री दयाराम से संबंधित है, जिनके पास कुल 4.3 हेक्टेयर कृषि भूमि उपलब्ध है, जिसमें से 1.0 हेक्टेयर भूमि सिंचित है। वे धान-चना, धान-मसूर, धान-गोहूँ, अरहर एवं नाइजर आधारित फसल चक्र अपनाते हैं। परंपरागत नाइजर खेती में अमरबेल के निरंतर एवं तीव्र प्रकोप के कारण उन्हें लंबे समय से कम उपज, कम शुद्ध आय तथा घटता लाभ-लागत अनुपात प्राप्त हो रहा था, जिससे नाइजर फसल की आर्थिक उपयोगिता प्रभावित हो रही थी।

#### समस्या की पहचान

- अमरबेल (*Cuscuta*) का गंभीर एवं बार-बार प्रकोप
- परंपरागत किस्मों एवं बुवाई विधियों पर निर्भरता
- वैज्ञानिक खरपतवार प्रबंधन तकनीकों का अभाव
- नाइजर फसल की कम उत्पादकता एवं लाभप्रदता

#### KVK द्वारा प्रदर्शित तकनीक

कृषि विज्ञान केंद्र, अनूपपुर द्वारा CFLD कार्यक्रम के अंतर्गत किसान के खेत पर निम्नलिखित वैज्ञानिक तकनीकों का प्रदर्शन किया गया—

- उन्नत नाइजर किस्म JNC-9 का उपयोग
- कार्बेन्डाजिम द्वारा बीज उपचार
- पूर्व-उद्भव शाकनाशी पेंडीमेथालिन @ 2.5 ली./हे. का प्रयोग
- लाइन बुवाई द्वारा बेहतर फसल स्थापना
- फसल अवधि में निरंतर तकनीकी मार्गदर्शन एवं निगरानी

#### उपज की स्थिति (क्विंटल/हेक्टेयर)

- CFLD प्रदर्शन उपज : 5.6

- किस्म की संभावित उपज : 7.0
- जिला औसत (पूर्व वर्ष) : 4.6
- राज्य औसत (पूर्व वर्ष) : 2.88

#### स्थानीय जाँच की तुलना में तकनीक का प्रदर्शन

विवरण	उपज (q/ha)	कुल लागत (₹/ha)	सकल आय (₹/ha)	शुद्ध आय (₹/ha)	बी:सी अनुपात
किसान की परंपरागत पद्धति	3.2	6,500	21,424	14,924	3.2
CFLD प्रदर्शन	5.9	10,365	39,500	29,135	3.8
प्रतिशत वृद्धि	84.3%	59.4%	84.3%	95.2%	18.75%

#### सफलता के प्रमुख बिंदु

1. पूर्व-उद्भव शाकनाशी के प्रयोग से अमरबेल पर प्रभावी नियंत्रण।
2. उन्नत किस्म JNC-9 से उपज एवं गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार।
3. परंपरागत पद्धति की तुलना में अधिक शुद्ध आय एवं बी:सी अनुपात।
4. तकनीक सरल, व्यावहारिक एवं आसानी से अपनाने योग्य।

#### किसान की प्रतिक्रिया

श्री दयाराम ने बताया कि CFLD के अंतर्गत प्रदर्शित तकनीक से अमरबेल की समस्या से मुक्ति मिली, नाइजर की उपज बढ़ी और आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। वे भविष्य में भी इस तकनीक को अपनाने तथा अन्य किसानों को प्रेरित करने के लिए तैयार हैं।

#### निष्कर्ष

CFLD कार्यक्रम के अंतर्गत नाइजर फसल में समन्वित खरपतवार प्रबंधन ने आदिवासी क्षेत्र में तिलहन उत्पादन एवं किसानों की आय बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह सफलता कहानी क्षेत्र के अन्य किसानों के लिए प्रेरणादायी एवं अनुकरणीय मॉडल है।

